रायपुर रानी। नवनिर्मित भवन के उद्घाटन समारोह में विजय मोहन वर्मा, ब्र.कु.किरण, ब्र.कु.आशा, ब्र.कु.रानी तथा अन्य।

रामगढ़। आई.टी.बी.पी.के कमाण्डेंट राणा युद्धवीर सिंह को शिवरात्रि का आध्यात्मिक संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अनीता।

संगमनेर। बाबा भगवत भजनासिंग को प्रदर्शनी का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करते हुए ब्र.कु.पद्मा तथा अन्य।

सांगोला। शिवरात्री का आध्यात्मिक संदेश देने के पश्चात् जज तेजसींग रावजी संधू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.यशोदा तथा अन्य।

सिंगरौली। श्रीमद्भगवताचार्य श्री बाल व्यास श्याम दास से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अनिता।

सोनपुर। 'शिव जयंति' पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए महाराज गिरीवर दास महाराज, रेणूका मिश्रा, स्वामी जी तथा अन्य।

परमात्मा की महिमा अपरंपार है

जब आप अपना संपूर्ण परिचय देते हैं तब ही वो आपको समझ सकते हैं। ठीक इसी तरह हमने भी आज तक ईश्वर के बारे में अपनी बुद्धि से अंदाजा लगाया। ईश्वर ऐसा हो सकता है...ऐसा हो सकता है ... इसलिए आज इतने मत-मतांतर हो गये है। जब अति धर्मग्लानि का समय होता है, तब वे अवतरित होकर स्वयं अपना परिचय देते हैं। अपने बारे में जानकारी देते हैं, संपूर्ण ज्ञान देते हैं और तब हम उसके यथार्थ स्वरूप को जान सकते हैं, पहचान सकते हैं और उसको उस स्वरूप में याद कर सकते हैं। भगवान कहते हैं - ''मैं उन पर विशेष कृपा करते हुए उनके अज्ञान अंधकार के कारण को दूर करता हूँ''। अज्ञान अंधकार का कारण क्या है, ये बुराईयां काम, क्रोध, राग, द्वेष, मोह, ये सभी कारण हैं दु:ख के। इसलिए कहा कि अज्ञान अंधकार को दूर कर, ज्ञान के प्रकाशमान दीपक द्वारा, उन्हें मैं आत्मभाव में स्थित करता हूँ। अर्थात् आत्म स्वरूप में स्थित होने की विधि परमात्मा बतलाते हैं। फिर अर्जुन पूछता है कि हे प्रभु! आप परमधाम के वासी, परम पवित्र परम सत्य हो, आप अजन्मा, सर्वोच्च दिव्य शक्ति हो, महान ऋषि भी इस सत्य की पुष्टि करते हैं, आपने जो कुछ भी कहा उसे मैं पूर्णत: सत्य मानता हूँ, आपके दिव्य स्वरूप को न देवतागण, न असुर समझ सकते हैं। आप देवों के भी देव 'महादेव हो, त्रिलोकीनाथ हो'। अब अर्जुन को ज्ञात हुआ कि परमात्मा का वह दिव्य स्वरूप क्या है।

अर्जुन भगवान से आग्रह करता है कि कृपा करके विस्तार पूर्वक हमें उन दैवी ऐश्वर्यों के बारे में बतायें और मैं किस तरह आपका निरंतर चिंतन करूं? आपका स्मरण किन-किन रूपों में किया जाए?

उसकी जिज्ञासा के प्रति भगवान उसे आगे बताते हैं कि हे अर्जुन! मेरा ऐश्वर्य असीम है। क्योंकि परमात्मा सर्वगुणों का सागर है, वह अनंत है। इसलिए परमात्मा अनंत गुणों का भंडार है, सर्व शक्तिमान भगवान कहते है, मेरा ऐश्वर्य असीम है मैं आदि -मध्य-अंत का ज्ञाता हूँ। संसार के तीनों कालों को मैं जानता हूँ। सर्व आत्माओं में सर्वश्रेष्ठ परमात्मा है। फिर भगवान ने एक-एक करके इक्कीस श्रेणी में सर्वोच्च स्थिति का वर्णन कर अपनी असीम स्वरूपों की विशेषतायें स्पष्ट की।

इक्कीस चीजों की जो विशेषतायें होती है उसके आधार पर कोई अपनी वास्तविकता का वर्णन करना चाहे तो कैसे? अर्थात् वो ऐश्वर्य जो आँखों से देखा नहीं जाता है। उनके ऐश्वर्य की असीम महिमा है, उसको कैसे वर्णन करें? इसलिये इक्कीस चीजों को लेकर के एक-एक चाहे वो भौतिक जगत की हो या आध्यात्मिक जगत की, का वर्णन करते हुए, सर्वोच्च स्थिति जो उसकी होती है, उससे अपनी तुलना की है।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

कहा वह जैसे प्रकाशों में तेजस्वी सूर्य के समान है। अब भगवान अपने असीम ऐश्वर्य का वर्णन करते हैं कि मेरा दिव्य स्वरूप कैसा है? सारे प्रकाश दुनिया में जितने भी सूर्य हैं, उसमें जो तेजस्वी सूर्य माना जाता है, ऐसे तेजस्वी सूर्य के समान मै हूँ। नक्षत्रों में चंद्रमा जैसी शीतलता है, तेजस्वी सूर्य समान है, लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि उसके नजदीक भी कोई नहीं जा सकता। बाहर खड़े रहो धूप में तो सूर्य की किरणें चुभती है लेकिन भगवान की किरणें कोई चुभने वाली नहीं है। तेजस्वी जरूर है सूर्य के समान लेकिन चंद्रमा जैसी शीतलता भी उसमें समायी हुई है। इतना शीतल वो प्रकाश है, चुभने वाला प्रकाश नहीं। फिर कहा समस्त पर्वतों में मेरू अर्थात् सर्वोच्च हूँ मैं। समस्त पुरोहितों में बृहस्पति, समस्त सेना नायकों में कार्तिकेय, इतना शक्तिशाली है, कल्याणकारी भी है। समस्त जलाशयों में समुद्र अर्थात् सर्वगुणों में सागर के तरह अनंत है। समस्त महर्षियों में भृगु की तरह, जिसकी विचारधारा सब बातों में उच्च है। वाणी में दिव्य ओमकार अर्थात् सर्वश्रेष्ठ ध्वनि ओमकार की है। तो इसी तरह परमात्मा की ध्वनि भी सर्वश्रेष्ठ है ओमकार की तरह, समस्त अंचलों में हिमालय की तरह है अंचल, कोई उसको हिला नहीं सकता है। समस्त वृक्षों में पीपल है। आज दुनिया में भी पीपल और तुलसी की पूजा की जाती है। पीपल और तुलसी की पूजा क्यों की जाती है? क्योंकि पीपल और तुलसी दो ही ऐसे हैं जो चौबीस घंटा ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। रात्रि के समय में भी पीपल ऑक्सीजन देता है। लोगों को प्राण वायु देता है। इसलिए उसकी पूजा करते हैं कि कोई उसको काटे नहीं। क्योंकि यही दो पेड़ है जो हमें चौबीस घण्टे ऑक्सीजन देते हैं। साथ ही साथ तुलसी के अंदर जो औषद्यि गुण है, वो भी बहुत महान् है। इसलिए उसकी पूजा की जाती है। उसी तरह परमात्मा भी चौबीसों घण्टा कल्याणकारी है। सर्व के प्रति शुभ, जैसे कि प्राण वायु देने का कार्य, इंसान को सकाश व शक्ति देने का कार्य करते हैं। सिद्ध पुरुषों में कपिल हैं। गजराजों में ऐरावत है। इतना सुंदर दिव्य स्वरूप है। मनुष्य में राजा अर्थात् सर्वोच्च अथॉरिटी, सुप्रीम अथॉरिटी है परमात्मा। हथियारों में वज्र है। कोई उसको खत्म नहीं कर सकता है। गायों में सुरभि है, सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली। भक्तों में भक्तराज प्रह्लाद है अर्थात् कितना अनन्य भाव है, सर्व के प्रति। पशुओं में सिंह शक्तिशाली है और पक्षियों में गरूड़ है। तीक्ष्ण बुद्धि है उसकी। शास्त्र धारियों में राम है अर्थात् राम को जैसे आदर्श माना गया हर बात में, व्यवहार में, व्यक्तित्व आदि में, सब बातों में आदर्श बताया है। ऐसे परमात्मा भी सर्वश्रेष्ठ आत्मा है। नदियों में गंगा अर्थात् इतना पवित्र निर्मल है। समस्त विद्या में अध्यात्म विद्या ऊचें ते ऊंची। समस्त ऋतुओं में वसंत ऋतु अर्थात् सदाकाल वसंत की तरह सर्व के प्रति स्नेह का सुंदर प्रवाह चलता ही रहता है। समस्त मुनियों में व्यास की तरह, मैं समस्त सृष्टि का बीज रूप हूँ।

संस्थान की प्लेटिनम.... पेज 12 का शेष...

था। ऐसा अवसर बार-बार नहीं आता है जहां इतने सारे संत महात्मा इक्ट्ठे बैठे हो। वहां सभी एकता के सूत्र में बंधे एक ही आवाज से मन ही मन शांति का अनुभव कर रहे थे।

अलकापुरी की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु.निरंजना ने समय की पहचान देते हुए कहा कि विश्व एक रंगमंच है और हम सब पार्टधारी हैं। अभी 5000 वर्षों का समय चक्र पुरा हो रहा है। अब पुन: इस धरा पर देवयुग अर्थात् सतयुग आने वाला है। इसलिए अब स्वयं को पहचानों हम शरीर नहीं एक चैतन्य शक्ति आत्मा है। हम आत्मा इस शरीर को चलाने वाली है। हम सभी आत्माओं का पिता निराकार परमपिता परमात्मा 'शिव' है।ब्र.कु.मीणा ने सामूहिक राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराकर सबको शांति का अनुभव कराया। ब्र.कु.कपिला ने संस्था का परिचय देते हुए संस्था के सफलतम 75 वर्षों की यात्रा का वर्णन किया। शिव स्तूति डांस द्वारा प्रस्तुत किये गये नृत्य ने सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम में 75 शिवध्वज लहराकर व दीप प्रज्ज्वलित कर मेले का उद्घाटन किया गया। जिससे वहां का वातावरण अलौकिकता से और आध्यात्मिक प्रकम्पन से दिव्यमय बन गया। नगीन पटेल ने संस्था की भूरि-भूरी प्रशंसा की और कार्यक्रम की सफलता के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। इस अवसर पर शहर के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे

भक्ति बढ़ रही

करने की दिशा में ज्ञान गोष्ठी, परमात्म शक्ति से हमारे जीवन में लाभ व उसका नित्य चिंतन व मनन करने के लिए कार्यक्रम का आयोजन करती है। मानवीय मन को सशक्त कर उसकी सुक्ष्म शक्तियों को जागृत कर शक्तिशाली बनाने से ही व्यक्ति विपरीत परिस्थिति व कठिनाईयों में शांति से रह सकता है।

पालिका उपाध्यक्ष अर्जुन मेवाड़ ने कहा कि यह 'एक परमात्मा एक विश्व परिवार' की कल्पना साकार होकर रहेगी। उन्होंने अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में संस्था को बधाई दी और कार्यक्रम की सफलता के प्रति अपनी शुभकामनाएं दी। इस कार्यक्रम में ब्र.कु.पूनम, पालीवाल समाज के अध्यक्ष हरगोविंद पालीवाल सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वागत नृत्य के साथ हुआ तथा मंच का कुशल संचालन ब्र.कु.रीटा ने किया।